कृषि विज्ञान केन्द्र, बनखेड़ी

जिला- होशंगाबाद म.प्र.

भाकृअनुप ICAR

अजोला एक चमत्कारी पशु आहार

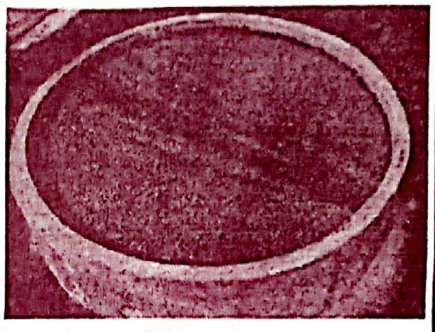

दरअसल अजोला तेजी से बढ़ने वाली एक प्रकार की जलीय फर्न है, जो पानी की सतह पर तैरती रहती है। अजोला पौष्टिक पशु प्रोटीन आहार है तथा धान की फसल में नील हरित काई की तरह अजोला को भी हरी खाद के रूप में उगाया जाता है और कई बार यह खेत में प्राकृतिक रूप से भी उग जाता है. इस हरी खाद से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और उत्पादन में भी बढ़ोत्तरी होती है. अजोला में उच्च मात्रा में प्रोटीन उपलब्ध होता है. प्राकृतिक रूप से यह उष्ण व गर्म उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है. देखने में यह शैवाल से मिलती जुलती है और आमतौर पर उथले पानी में अथवा धान के खेत में पाई जाती है।

अजोला के गुण:-

1. अजोला जल सतह पर मुक्त रूप से तैरने वाली जलीय फर्न है. यह छोटे छोटे समूह में सघन हरित गुच्छ की तरह तैरती है. भारत में मुख्य रूप से अजोला की जाति अजोला पिन्नाटा पाई जाती है. यह काफी हद तक गर्मी सहन करने वाली किस्म है।
2. यह जल मे तीव्र गति से बढवार करती है।
3. इसमें उत्तम गुणवत्ता युक्त प्रोटीन, विटामिन एवं मिनरल होने के कारण मवेशी इसे आसानी से पचा लेते है।
4. इसकी उत्पादन लागत काफी कम होती है
5. यह औसतन 15 किग्रा वर्गमीटर की दर से प्रति सप्ताह उपज देती है।
6. सामान्य अवस्था मे यह फर्न तीन दिन में दौगुनी हो जाती है।
7. यह पशुओ के लिए आदर्श आहार के साथ साथ भूमि उर्वरा शक्ति बढाने के लिए हरी खाद के रूप में भी उपयुक्त है।
8. रिजका एवं संकर नेपियर की तुलना मे अजोला से 4 से 5 गुना उच्च गुणवता युक्त प्रोटीन प्राप्त होती है यदि जैव भार उत्पादन के रूप में तुलना करे तो रिजका व संकर नेपियर से अजोला 4 से 10 गुना तक अधिक उत्पादन देता है इसिलिए अजोला को जादुई फर्न, सर्वोत्तम पादप, हरा सोना अथवा पशुओ के लिए च्वनप्राश की संज्ञ दी गई है।
9. अजोला क्यारी के पानी का उपयोग जैविक खेती में किया जाता है। अजोला क्यारी से हटाये पानी को सब्जियों एवं पुष्प खेती मे काम मे लेने से यह एक वृद्धि नियामक का कार्य करता है। जिससे सब्जियों एवं फूलों के उत्पादन में वृद्धि होती है। अजोला एक उत्तम जैविक एवं हरी खाद के रूप में कार्य करता है।

अजोला तैयार करने की विधि

1. गर्मी में छायादार एवं ठण्ड में धूप वाले स्थान पर 10x3x2 फिट का क्यारी खोदे
2. गड्डा पर एक सिलपोलिन प्लास्टिक सीट बिछा कर किनारो को ईट व मिटटी से दवा दे।
3. गड्डे में 10-12 इंच तक साफ एवं तजा पानी भर दे।
4. गड्डे में 10 से 15 किलोग्राम छनी हुई उपजाऊ मिट्टी , 10 किलोग्राम गोबर का घोल , 50-60 ग्राम सिंगल सुपरफास्पेट को पानी में घोलकर गड्डे में अच्छे से फैला दे।
5. गड्डे में इकट्ठा हुए घास-फूस को अच्छे से छानकर बाहर कर दे ।
6. 800 ग्राम से 1 किलोग्राम तक अजोला कल्चर को गड्डे में डाल दे ।
7. 10-15 दिन में पुरे गड्ढे में फैल जायेगा इसके बाद अजोला को गड्डे से निकाल कर साफ पानी से धुलकर एक दूध देने वाली पशु को 1.5 से 02 किलो प्रतिदिन दे।

Scanned by CamScanner

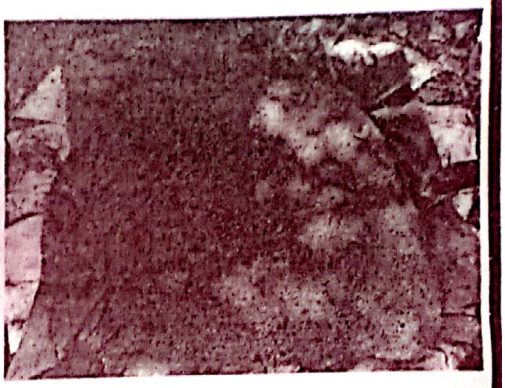

8. अजोला की अच्छी वृद्धि के लिए प्रत्येक माह 10 किलोग्राम गोबर का घोल एंव 50 ग्राम सिंगल सुपरफास्पेट एक किनारे से गड्डे में डाल दे।
9. प्रत्येक 3 माह बाद अजोला को हटाकर पानी व मिट्टी बदले तथा नई क्यारी के रूप में दोबारा सम्बर्धन करे।

पशुओं को अजोला चारा खिलाने के लाभ

1. अजोला सस्ता, सुपाच्य एवं पौष्टिक पूरक पशु आहार है. इसे खिलाने से वसा व वसा रहित पदार्थ सामान्य आहार खाने वाले पशुओं के दूध में अधिक पाई जाती है. पशुओं में बांझपन निवारण में उपयोगी है. पशुओं के पेशाब में खून की समस्या फॉस्फोरस की कमी से होती है. पशुओं को अजोला खिलाने से यह कमी दूर हो जाती है. अजोला से पशुओं में कैल्शियम, फासफोरस, लोहे की आवश्यकता की पूर्ति होती है जिससे पशुओं का शारिरिक विकास अच्छा है. अजोला में प्रोटीन आवश्यक अमीनो एसिड, विटामिन (विटामिन ए, विटामिन बी-12 तथा बीटा-कैरोटीन) एवं खनिज लवण जैसे कैल्शियम, फास्फोरस, पोटेशियम, आयरन, कापर, मैगनेशियम आदि प्रचुर मात्रा में पाए जाते है. इसमें शुष्क मात्रा के आधार पर 40-60 प्रतिशत प्रोटीन, 10-15 प्रतिशत खनिज एवं 7-10 प्रतिशत एमीनो अम्ल, जैव सक्रिय पदार्थ एवं पोलिमर्स आदि पाये जाते है. इसमें कार्बोहइड्रेट एवं वसा की मात्रा बहुत कम होती है. अत: इसकी संरचना इसे अत्यंत पौष्टिक एवं असरकारक आदर्श पशु आहार बनाती है. यह गाय, भैंस, भेड़, बकरियों , मुर्गियों आदि के लिए एक आदर्श चारा है.

2. दुधारू पशुओं को उनके दैनिक आहार के साथ 1.5 से 2 किग्रा. अजोला प्रतिदिन खिलाने से दुग्ध उत्पादन में 15-20 प्रतिशत वृद्धि होती है। इसके साथ ही 20 से 25 प्रतिशत रोज के चारे में बचत भी होती है, इसे खाने वाली गाय-भैसों की दूध की गुणवत्ता भी पहले से बेहत्तर हो जाती है।
3. प्रदेश में मुर्गीपालन व्यवसाय भी बहुतायत में प्रचलित है। यह बेहद सुपाच्य होता है और यह मुर्गियों का भी पसंदीदा आहार है। कुक्कुट आहार के रूप में अजोला का प्रयोग करने पर ब्रायलर पक्षियों के भार में वृद्धि तथा अण्डा उत्पादन में भी वृद्धि होती है। अजोला पोल्ट्री बईस 30-50 ग्राम प्रतिदिन खिलाये तो इससे साधारण चारा खाने वाली बईस की तुलना में उनका वजन 10 से 12 प्रतिशत ज्यादा होता है।
4. अजोला को भेड़-बकरियों के आहार के रूप में भी बखूबी इस्तेमाल किया जाता है, भेड़-बकरियों को 150-200 ग्राम ताजा अजोला प्रतिदिन खिलाये तो शारिरिक वृद्धि एवं दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है।

सावधनियां -

1. क्यारी में जल स्तर को 10 -12 इंच तक बनाये रखें एवं इससे कम होने पर ताजा पानी गड्डे में डाल दे।
2. अजोला की अच्छी बढवार हेतु 20-35 सेन्टीग्रेड तापक्रम उपयुक्त रहता है। शीत ऋतु में अजोला क्यारी के प्लास्टिक मल्च अथवा पुरानी बोरी के टाट अथवा चददर से रात्रि में ढक दे तथा गर्मी में अजोला क्यारी के ऊपर नेट का प्रयोग करे जिससे सीधे सूर्य का प्रकाश अजोला पर न पड़े।
3. अजोला पशुओ को खिलाने से पहले अजोला को पानी से निकालने के बाद अच्छी तरह साफ कर ले जिससे गोबर की गंध न आये

जानकारी के लिए यहां करें संपर्क

अगर आपको अजोला का बीज चाहिए तो अपने क्षेत्र के कृषि विज्ञान केंद्र बनखेड़ी जिला होशंगाबाद से अजोला बीज नि:शुल्क प्राप्त कर सकते है
kvkgovindnagar2017@gmail.com

डॉ.दिवाकर वर्मा (वैज्ञानिक पशुपालन) मो. 9138105711, 8004115422

Scanned by CamScanner